संत कबीरदास

प्रा.डॉ. सुभाष इंगळे
श्री छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय,
उमरगा

प्रस्तांवना

- **कबीर** या भगत **कबीर** 15वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी कवि और **संत** थे। वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। इनकी रचनाओं

ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आंदोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया।

कबीर दास जी की जीवनी

- **नाम** - संत कबीरदास (Kabir Das)
जन्म - 1398
जन्म स्थान - लहरतारा ताल, काशी
मृत्यु - 1518
मृत्यु स्थान - मगहर, उत्तर प्रदेश
माता का नाम - नीमा
पिता का नाम - नीरू
पत्नी का नाम - लोई
पुत्र का नाम - कमाल
पुत्री का नाम - कमाली
कर्म भूमि - काशी, बनारस
कार्य क्षेत्र - समाज सुधारक, कवि, सूत काटकर कपड़ा बनाना
मुख्य रचनाएं - साखी, सबद, रमैनी
भाषा - अवधी, सधुक्कड़ी, पंचमेल खिचड़ी
शिक्षा - निरक्षर
नागरिकता - भारतीय

कबीर दास जी की जीवनी

कबीर ने खुद को जुलाहे के रुप में पेश किया है –

“जाति जुलाहा नाम कबीरा
बनि बनि फिरो उदासी।

कबीर का जन्म

चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए।

जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए॥

घन गरजें दामिनि दमके बूँदे बरषें झर लाग गए।

लहर तलाब में कमल खिले तहँ कबीर भानु प्रगट भए

कबीर दास जी की शिक्षा

कहा जाता है कि कबीर दास जी निरक्षर थे अर्थात वे पढ़े लिखे नहीं थे लेकन वे अन्य बच्चों से एकदम अलग थे आपको बता दें कि गरीबी की वजह से उनके माता-पिता उन्हें मदरसे नहीं भेज सके। इसलिए कबीरदास जी किताबी विद्या नहीं ग्रहण कर सके।

मसि कागद छूवो नहीं, क़लम गही नहिं हाथ।

कबीरदास जी का वैवाहिक जीवन

कबीरदास जी का विवाह वनखेड़ी बैरागी की कन्या "लोई" के साथ हुआ था। विवाह के बाद

दोनों को संतान का सुख मिला कबीरदास जी के बेटे का नाम कमाल था जबकि बेटी का नाम कमाली था।

वहीं इन लोगों को परिवरिश करने के लिए कबीरदास जी को अपने करघे पर काफी काम करना पड़ता था।

जिससे घर साधु-संतों का आना-जाना लगा रहता था।

वहीं उनके ग्रंथ साहब के एक श्लोक से अनुमान लगाया जाता है उनका पुत्र कमाल कबीर दास जी के मत का विरोधी था।

बूड़ा बंस कबीर का, उपजा पूत कमाल।

हरि का सिमरन छोडि के, घर ले आया माल।

करीब दास जी की विशेषताएं

•करीब दास जी को कई भाषाओं का ज्ञान था वे साधु-संतों के साथ कई जगह भ्रमण पर जाते रहते थे इसलिए उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान हो गया था। इसके साथ ही कबीरदास अपने विचारो और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए स्थानीय भाषा के शब्दों का इस्तेमाल करते थे। कबीर दास जी की भाषा को 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है।

कबीर अपनी स्थानीय भाषा में लोगो को समझाते थे और उपदेश देते थे। इसके साथ ही वे जगह-जगह पर उदाहरण देकर अपनी बातों को लोगो के अंतरमन तक पहुंचाने की कोशिश करते थे। कबीर के वाणी को साखी, सबद और रमैनी तीनो रूपों में लिखा गया है। जो 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। कबीर ग्रन्थावली में भी उनकी रचनाएं का संग्रह देखने को मिलता है।

कबीर दास की ये भी एक खासियत थी कि वे निंदा करने वाले लोगों को अपना हितैषी मानते थे। कबीरदास को सज्जनों, साधु-संतो की संगति अच्छी लगती थी। कबीर दास जी का कहना था कि -

निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

कबीर दास जी की साहित्यिक देन

कबीर की वाणी का संग्रह `बीजक' के नाम से मशहूर हैं इसके भी तीन हिस्से हैं-

रमैनी, सबद और सारवी यह पंजाबी, राजस्थानी, खड़ी बोली, अवधी, पूरबी, ब्रजभाषा समेत कई भाषाओं की खिचड़ी है।

कबीरदास जी का मानना था कि इंसान के सबसे पास उसके माता-पिता, दोस्त और मित्र रहते हैं

इसलिए वे परमात्मा को भी इसी दृष्टि से देखते हैं वे कहते थे कि –

'हरिमोर पिउ, मैं राम की बहुरिया' तो कभी कहते हैं, `हरि जननी मैं बालक तोरा'

कबीर दास जी की मृत्यु

कबीर दास जी ने अपना पूरा जीवन काशी में ही गुजारा लेकिन वह मरने के समय मगहर चले गए थे। ऐसा माना जाता है उस समय लोग मानते थे कि मगहर में मरने से नरक मिलता है और काशी में प्राण त्यागने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

वहीं कबीर को जब अपने आखिरी समय का अंदेशा हो गया था तब वे लोगों की इस धारणा को तोड़ने के मगहर चले गए।

ये भी कहा जाता है कि कबीर के शत्रुओं ने उनको मगहर जाने के लिए मजबूर किया था। वे चाहते थे कि कबीर की मुक्ति न हो पाए, लेकिन कबीर तो काशी मरन से नहीं, राम की भक्ति से मुक्ति पाना चाहते थे।

“जौ काशी तन तजै कबीरा

तो रामै कौन निहोटा।”

धन्यवाद